आरती शनिवार की

आरती कीजै नरसिंह कुंवर की,
वेद विमल यश गाऊं मेरे प्रभु जी । टेक ।
पहली आरती प्रहलाद उबारे,
हिरणाकुश नख उदर विदारे ।
दूसरी आरती बामन सेवा,
बलि के द्वारे परे हरि देवा ।
तीसरी आरती ब्रह्मा पधारे,
सहस्त्र बाहु के भुज उखारे ।
चौथी आरती असुर संहारे,
भक्त विभीषण लंक पधारे ।
पांचवीं आरती कंस पछारे,
गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले ।
तुलसी को पत्र कंठ मणि मीरा,
हरषि निरखि गावै दास कबीरा ।

विवरण

हम भगवान नरसिंह कुंवर की आरती करते हैं, इनकी सुन्दर कीर्ति को गाते हैं, जिनका वेदों में भी वर्णन है । आपने हिरण्यकश्यपू का वध करके प्रहलाद को बचाया था, फिर हम आपको बामन भगवान के स्प में जानते हैं, जो राजा बलि के द्वार पर जाकर तीन पग जमीन माँगा था ।

उसके बाद हम आपको ब्रह्मा के स्प में जानते हैं, जिसने सहस्त्रबाहु के हाथों को तोड़ डाला था ।चौथी बार आपने राक्षसों का नाश करके अपने भक्त विभीषण के घर लंका में पधारा था ।

पाँचवी बार आपने कंस का वध करके गोपी, ग्वाल बाल एवं सभी

सखियों की रक्षा की थी । तुलसी पत्र से आप अत्यन्त ही प्रसन्न रहते हैं । आपके इन गुणों को कबीर दास आनन्दित मन से गाते हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.